वीतराग शासन जयवंत हो

श्री लोकमंगल पूजन विधान

माण्डला

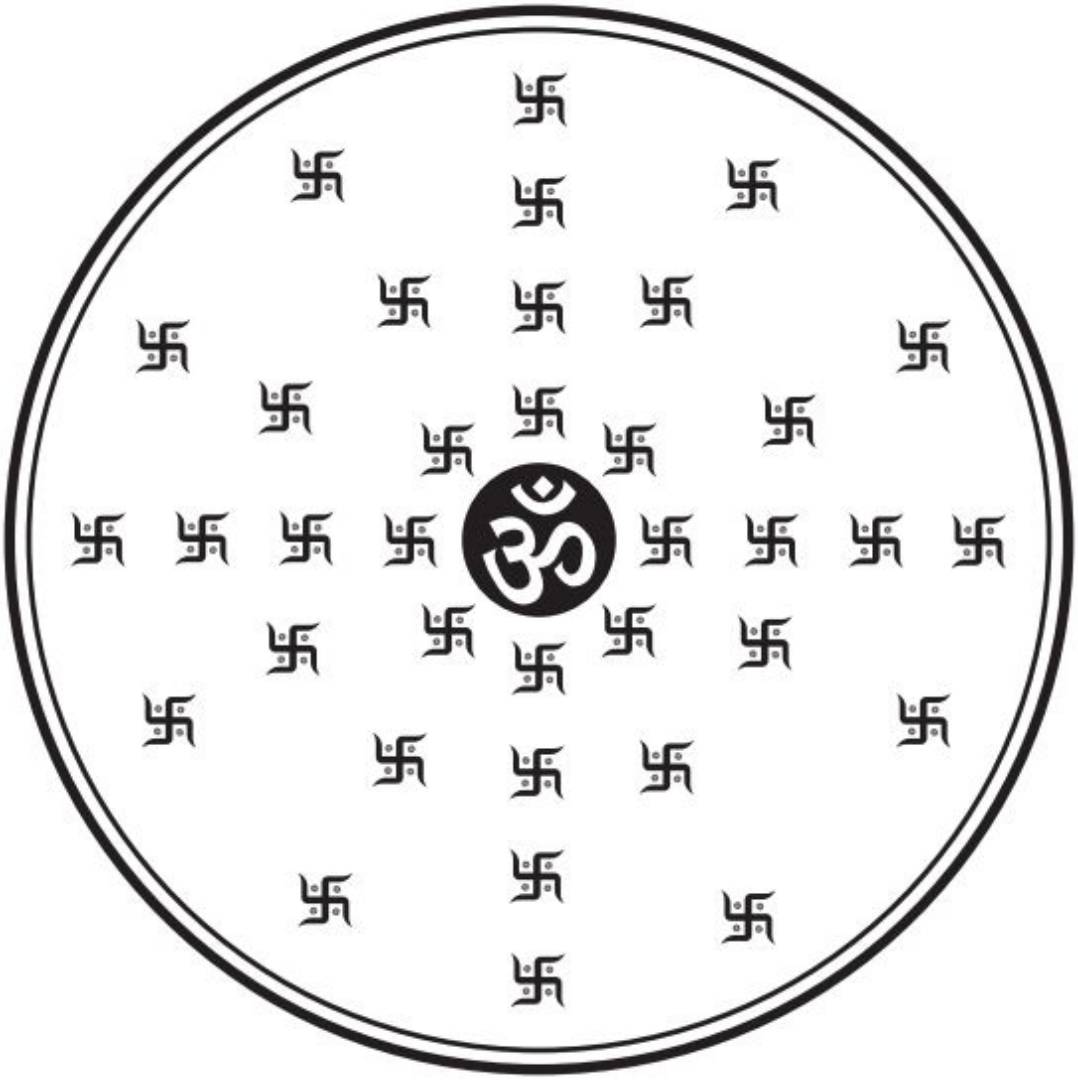

रचयिता :

प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

श्री लोकमंगल व्रत पूजन विधान

स्थापना

मंगल चार लोक में गाए, अर्हत् सिद्ध साधू मंगल।
धर्म केवली कथित लोक में, हरने वाला है कलमल॥
मंगल मनो भावना करने, धारण करें धर्म शुभकार।
आह्वानन् करते निज उर में, नत होकर के बारम्बार॥

दोहा-व्रत करते हैं भाव से, जग में जो भी जीव।
शिवपद में कारण विशद, पावें पुण्य अतीव॥

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मोतियादाम छन्द)

भराया गंगा का शुभ नीर, नाश हो जन्म जरा की पीर।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

बनाई हमनें यह शुभ गंध, नाश हो भव आतप अरहंत।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो चंदनं निर्व. स्वाहा।

धुवाये अक्षत धवल जिनेश!, प्राप्त हो अक्षत सुपद विशेष।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो अक्षतं निर्व. स्वाहा।

पुष्प यह चढ़ा रहे जिनराज, काम रुज नश पाएँ शिवराज।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुचरु यह चढ़ा रहे हम आज, क्षुधा रूज नाश करें जिनराज।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

लिया यह घृत का दीप प्रजाल, मोह का नाश होय अब जाल।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाएँ अग्नी में यह धूप, कर्म नश पाएँ सुपद अनूप।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाने लाए फल रसदार, प्राप्त हो मोक्ष महल का द्वार।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते विशदभाव से अर्घ, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।
लोक मंगल व्रत रहा महान, करें जो पावें निज कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।
शांतीधारा दे रहे, जागे मम उर हर्ष।।

।। शांतये शांतिधारा ।।

दोहा-नाश करें हम जो विशद, छाया है तम घोर।
पुष्पांजलि करते यहाँ, मंगल हो चहुँ ओर॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा-अर्हतादि मंगल विशद, पावन रहे त्रिकाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हम जयमाल॥

(चाल-टप्पा)

अर्हत् मंगल प्रथम कहाए, सिद्ध तथा भाई।
परमातम यह पूज्य लोक में, होते अतिशायी॥
पूजते हम जिनपद भाई॥1॥
सर्व लोक में मंगल जिनके, हम हैं अनुयायी॥टेक॥
सर्वसाधु की तीन लोक में, फैली प्रभुताई।
संयम के धारी हो करके, शिव पदवी पाई॥
पूजते हम जिनपद भाई॥2॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरणयुत, जैन धर्म भाई।
रहा लोक में अनुपम जिसकी, महिमा है छाई॥
पूजते हम जिनपद भाई॥3॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष के, स्थल जो भाई।
ज्ञानी जन से पूज्य लोक में, हैं जो अधिकाई॥
पूजते हम जिनपद भाई॥4॥

फैल रही है जिनवाणी की, महिमा अतिशायी।
ॐकार मय दिव्य देशना, 'विशद' पूज्य गायी॥
पूजते हम जिनपद भाई॥5॥

दोहा- मंगलमय यह लोक है, मंगलमय भगवान।
मंगलमय जग पूज्य का, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- जिनकी अर्चा से बने, जीवन सुखद महान।
मंगलमय महिमा 'विशद', गाते हैं यश गान॥

(पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

दोहा- अर्हत् सिद्ध साधू परम, जैन धर्म शुभकार।
जीव बनाए धर्म को, विशद हृदय का हार॥

(पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)

1. चार गति निवारक श्री जिन के अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

पशु गति में त्रस स्थावर गाए, वध बन्धन के दुःख उठाए।
उनसे प्राणी मुक्ती पाएँ, भाव सहित जिनवर को ध्याएँ॥1॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगति निवारणाय श्री अरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अति संक्लेश भाव जो पावें, वो 'नरकों' में दुःख उठावें।
उनसे प्राणी मुक्ति पाएँ, भाव सहित जिनवर को ध्याएँ।।2।।

ॐ ह्रीं नरकगति निवारणाय श्री अरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पुण्य योग से 'नरगति' पाएँ, अज्ञानी हो जगत भ्रमाएँ।
उनसे प्राणी मुक्ति पाएँ, भाव सहित जिनवर को ध्याएँ।।3।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगति निवारणाय श्री अरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'स्वर्गों' में प्राणी उपजावें, मिथ्यामति से अति दुख पावें।
उनसे प्राणी मुक्ति पाएँ, भाव सहित जिनवर को ध्याएँ।।4।।

ॐ ह्रीं देवगति निवारणाय श्री अरहंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

2. चार कषाय रहित श्री जिन के अर्घ्य

(मोतियादाम छन्द)

'क्रोध' जो करते जग के जीव, दुःख भव-भव में पाएँ अतीव।
करें जो भी कषाय का अन्त, जीव वे बन जाते अरहंत।।5।।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय निवारकाय श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जीव जो करने वाले 'मान', कभी न पाते हैं सम्मान।
करें जो भी कषाय का अन्त, जीव वे बन जाते अरहंत।।6।।

ॐ ह्रीं मान कषाय निवारकाय श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

करें जो जग में 'मायाचार', बढ़े उनका भारी संसार।
करें जो भी कषाय का अन्त, जीव वे बन जाते अरहंत।।7।।

ॐ ह्रीं माया कषाय निवारकाय श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रहे जिनके भी मन में 'लोभ', बढ़े उनके अंतर में क्षोभ।
करें जो भी कषाय का अन्त, जीव वे बन जाते अरहंत॥8॥
ॐ ह्रीं लोभ कषाय निवारकाय श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

3. बंध निवारक अर्घ्य

जीव यह बंध स्वाभाविक पाय, 'बन्ध प्रकृति' जो कहलाय।
करें जो कर्म बन्ध का अंत, बने वह जीव स्वयं अरहंत॥9॥
ॐ ह्रीं प्रकृतिबन्ध निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
कर्म जो बँधते जितने काल, कहाए 'स्थिति बंध' त्रिकाल।
करें जो कर्म बन्ध का अंत, बने वह जीव स्वयं अरहंत॥10॥
ॐ ह्रीं स्थितिबन्ध निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
कर्म का जो भी है फलदान, कहे 'अनुभाग बंध' भगवान!।
करें जो कर्म बन्ध का अंत, बने वह जीव स्वयं अरहंत॥11॥
ॐ ह्रीं अनुभागबन्ध निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
बन्ध का जो भी रहा प्रमाण, बन्ध वह रहा 'प्रदेश' सुजान।
करें जो कर्म बन्ध का अंत, बने वह जीव स्वयं अरहंत॥12॥
ॐ ह्रीं प्रदेशबन्ध निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

4. हिंसा निवारण अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

ईर्ष्या बैर से जीव घात हो, 'हिंसा संकल्पी' वह जान।
इसके त्यागी रहे लोक में, करने वाले जग कल्याण॥13॥
ॐ ह्रीं संकल्पी हिंसा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जो व्यापार में हिंसा होवे, वह 'हिंसा उद्योगी' जान।
इसके त्यागी रहे लोक में, करने वाले जग कल्याण।।14।।

ॐ ह्रीं उद्योगी हिंसा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गृहस्थ कार्य खेती में जो हो, वह 'आरम्भी हिंसा' मान।
इसके त्यागी रहे लोक में, करने वाले जग कल्याण।।15।।

ॐ ह्रीं आरम्भी हिंसा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धर्म की रक्षा में हो भाई, हिंसा कही 'विरोधी' जान।
इसके त्यागी रहे लोक में, करने वाले जग कल्याण।।16।।

ॐ ह्रीं विरोधी हिंसा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

5. चार संज्ञा निवारण अर्घ्य

(चाल छन्द)

भोजन की इच्छा पाए, 'संज्ञा आहार' कहाए।
होते जो इसके नाशी, बनते हैं शिवपुर वासी।।17।।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कोइ दृश्य देख डर जाए, 'भय संज्ञा' यही कहाए।
होते जो इसके नाशी, बनते हैं शिवपुर वासी।।18।।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन मे जो काम सताए, 'मैथुन संज्ञा' कहलाए।
होते जो इसके नाशी, बनते हैं शिवपुर वासी।।19।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन में धन इच्छा आए, 'परिग्रह संज्ञा' कहलाए।
होते जो इसके नाशी, बनते हैं शिवपुर वासी।।20।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

6. चार प्राण निवारण अर्घ्य

पञ्चेद्रिय प्राण कहाए, इनसे प्राणी दुख पाए।
प्रभु 'इन्द्रिय प्राण' नशाए, जो विशद मोक्षपद पाए।।21।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय प्राण निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मन वचन काय बल गाए, जो जग में भ्रमण कराए।
प्रभु जी 'बल प्राण' नशाए, फिर शिवपुर धाम बनाए।।22।।

ॐ ह्रीं बल प्राण निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

है प्राण आयु दुखदायी, संसार भ्रमाए भाई।
प्रभु 'आयु प्राण' नशाए, जो मोक्ष महापद पाए।।23।।

ॐ ह्रीं आयु प्राण निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

है श्वासोच्छवास हे भाई!, जीवों को दुख प्रदायी।
जिन श्वासोच्छवास नशाए, जो मुक्ती पद को पाए।।24।।

ॐ ह्रीं श्वोच्छवास प्राण निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

7. निक्षेप निवारण अर्घ्य

गुण जाति रहित कहलाए, संज्ञा वह 'नाम' की पाए।
प्रभु संज्ञा नाम नशाए, फिर शिवपुर धाम बनाए।।25।।

ॐ ह्रीं नाम निक्षेप निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धातू पाषाण में भाई, 'स्थापन' संज्ञा गाई।
संज्ञा यह प्रभु नशाए, फिर शिवपुर धाम बनाए।।26।।

ॐ ह्रीं स्थापना निक्षेप निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जो भूत भविष्यत् जाने, 'निक्षेप द्रव्य' वह माने।
प्रभु संज्ञा द्रव्य नशाए, फिर शिवपुर धाम बनाए।।27।।

ॐ ह्रीं द्रव्य निक्षेप निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जस तस वस्तू जो पाए, 'निक्षेप भाव' कहलाए।
प्रभु संज्ञा भाव नशाए, फिर शिवपुर धाम बनाए।।28।।

ॐ ह्रीं भाव निक्षेप निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

8. घातिकर्म निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

'ज्ञानावरणी कर्म' कहाए, ज्ञान प्रकट ना होने पाए।
कर्मनाश यह करते ज्ञानी, होते जन-जन के कल्याणी।।29।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्म 'दर्शनावरण' कहाए, दर्शन गुण पर रोक लगाए।
कर्मनाश यह करते ज्ञानी, होते जन-जन के कल्याणी।।30।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'मोहनीय' है मोहनकारी, जिससे प्राणी होय विकारी।
कर्मनाश यह करते ज्ञानी, होते जन-जन के कल्याणी।।31।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'अन्तराय' है विघ्न प्रदायी, बलानंत घाती है भाई।
कर्मनाश यह करते ज्ञानी, होते जन-जन के कल्याणी॥32॥

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म निवारक श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

9. पुरुषार्थ निवारक अर्घ्य

पुण्य करे जो भी संसारी, है 'पुरुषार्थ धर्म' का धारी।
निश्चय जो पुरूषार्थ जगाए, पावन वह शिवपदवी पाए॥33॥

ॐ ह्रीं धर्म पुरुषार्थ प्राप्त श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पुण्य हेतु जो अर्थ कमाए, वह 'पुरुषार्थ अर्थ' कहलाए।
निश्चय जो पुरूषार्थ जगाए, पावन वह शिवपदवी पाए॥34॥

ॐ ह्रीं अर्थ पुरुषार्थ प्राप्त श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

इन्द्रिय विषय काम कहलाए, उससे स्वयं विरक्ती पाए।
निश्चय जो पुरुषार्थ जगाए, पावन वह शिवपदवी पाए॥35॥

ॐ ह्रीं काम पुरुषार्थ प्राप्त श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अपने सारे कर्म नशाए, मोक्ष महाफल प्राणी पाए।
निश्चय जो पुरुषार्थ जगाए, पावन वह शिवपदवी पाए॥36॥

ॐ ह्रीं मोक्ष पुरुषार्थ श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गति कषाय संज्ञादि निवारण, करके पाना पद निर्वाण।
'विशद' भाव से व्रत कर प्राणी, पाते हैं शिव का सोपान॥37॥

ॐ ह्रीं चतुःगत्यादि निवारकाय श्रीअरहंत जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- मंगल हो इस लोक में, हों खुशियाँ चहुँ ओर।
जयमाला गाते यहाँ, खुश हो भाव विभोर।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् मंगल रहे लोक में, कर्म घातिया रहित प्रधान।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, धारी वीतराग विज्ञान।।
दोष अठारह रहित कहे हैं, होते जो छियालिस गुणवान।
दिव्य देशना जिनकी पावन, करने वाली जग कल्याण।।1।।
मंगल सिद्ध रहे अविकारी, अष्टकर्म का किए विनाश।
शाश्वत् अष्ट गुणों के धारी, करते सिद्धशिला पर वास।।
नित्य निरंजन ज्ञान शरीरी, सुखानन्त में रहते लीन।
अतः भाव से जिनकी अर्चा, करते जग में ज्ञान प्रवीण।।2।।
विषयाशा के त्यागी साधू, जो आरम्भ परिग्रह हीन।
ज्ञान ध्यान तप करने वाले, निज स्वभाव में रहते लीन।।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, कर्म निर्जरा करते घोर।
उत्तम संयम के धारी ऋषि, करें साधना भाव विभोर।।3।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चारितमय, धर्म कहा है मंगलकार।
धारण करने वाले प्राणी, पुण्य कमाएँ अपरम्पार।।
वस्तु स्वभाव धर्म है पावन, उत्तम क्षमा आदि दश धर्म।
परम अहिंसा मयी धरम के, धारी करते हैं सत्कर्म।।4।।
सुदि अषाढ़ की चौथ से व्रत लें, कार्तिक माह शुक्ल तक जान।
उत्तम विधि प्रोषध एकाशन, है जघन्य व्रत की पहचान।।

जिन मंदिर में जिन प्रतिमा का, भाव सहित अभिषेक कराय।
स्वस्तिक रचकर उसके ऊपर, चार ढेरी में पुंज चढ़ाय।।5।।

दोहा- अर्हत् मंगल आदिकर, सिद्ध साधु भी जान।
कथित केवली धर्म कर, पुंज चढ़ाए मान।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक लोक मंगल समूहेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करके जाप कर, शांति करें शुभकार।
मंगल होवे लोक में, मन में करें विचार।।

(पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)

श्री लोकमंगल व्रत विधान की आरती

(तर्ज- इह विधि मंगल...)

लोक मंगल की आरती कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।
अर्हत् मंगल प्रथम कहाए, तीन लोक में मंगल गाए।।लोक...।।1।।
पावन केवल ज्ञान जगाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।।लोक...।।2।।
द्वितीय मंगल सिद्ध कहाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।।लोक...।।3।।
ज्ञान शरीरी जो कहलाए, शाश्वत सुख प्रभु जी उपजाए।।लोक...।।4।।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, जैन धर्म के हैं अनुरागी।।लोक...।।5।।
चौथी आरती जैन धर्म की, अनुपम केवलि कथित परम की।।लोक.।।6।।
दर्श ज्ञान चारितमय भाई, फैली जिसकी जगप्रभुताई।।लोक...।।7।।
लोक मंगल व्रत करे कराएँ, उभय लोक सुखशांती पाए।।लोक...।।8।।
शिवपुर अपना धाम बनाएँ, विशद ज्ञान पा शिव सुख पाएँ।।लोक...।।9।।

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज: - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....।। टेक।।
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।1।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।2।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।3।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।4।।